DEPUTY DIRECTOR OF EDUCATION THRISSUR

392

Code No: 8

सागर में लहरें क्यों उमड़ रही हैं?

सागर

जहाँ हर लहर एक नई शुरुआतें हैं,
जहाँ हर लहर एक नई जहाँ के निरसे हैं,
जहाँ हर लहर नई कहानियाँ बनाती हैं,
जहाँ हर लहर नई ज़िंदगियाँ बनाती हैं,
लगा जैसे सागर में लहरें उमड़ रही थी.....

बन गई थी मेरी ज़िंदगी एक सागर,
जहाँ हर रिश्ते, हर नाते,
सब मिलकर बना रही थी,
एक विशाल सागर की लहरें।
लगा मुझे जैसे मैं थी हूँ,
एक काले गगन के नीचे,
जो कर रही थी बयान अपनी गुस्से को।
बन गई मेरी विद्रोही दिल सागर की लहरें.....

हर किस्म में, हर कहानियों में,
हर ज़िंदगियों में, हर जन्मों में,
सारे जहाँ पड गई थी लहरों की परछाई।
बन गई मेरी ज़िंदगी भी उमड कर,
बन गई मेरी कहानियाँ भी उमड कर,
हर रिश्ते भी उमड गई,
है सागर हर किसी की जिंदगियों में;
जो वक्त होने पर सबका विनाश करता है।

कहते हैं ज़िंदगी एक खेल है,
जो बाज़ी जीता, वो आगे,
और जो हारा, वो नीचे।
जिसमें एक वक्त खुशी है, तो,
एक वक्त गम....।

कहती थी माँ बनो तो हवा जैसा,
क्योंकि है वो चीज़ जो लहरों को काबू करता,
लहरों को लहर बनाता।
चाहे दुख आये, या फिर सुख,
बनो तो फिर हवा ही हवा,
जो है एक वक्त भयानक,
तो है एक वक्त शांत।

जीवन की इस विशाल समुद्र में,
रह गया मैं अकेला,
रह गया मैं सहारे के लिए;
पर ना कोई आया, ना कोई;
हाथ मेरी थामा।

दुखों की लहरें भी क्या अजीब होती हैं,
जो करने आती ही हैं विनाश-ही-विनाश।
सुखों की लहरें भी क्या अजीब होती हैं,
जो सिर्फ दुख के आने की राह खोलती हैं।
हर जहाँ है सागर की लहरें,
हर जहाँ है लहरों की काली छाया।

THRISSUR - 3

Code No:- 8

लहरों में उलझते - उलझते,
बन चुकी थी मैं भी एक लहर।
लहरें भी क्या अजीब होती है,
जो जाये उनके मुँह में,
वही वापस लेकर ही आता,
वैसे ही है ज़िंदगी,
जो जाता पहले से होता,
वही फिर वापस भी आता।

~~है लहरें नई ज़िंदगी की~~
आते है फिर जाते है,
जाते है फिर आते है,
एक ही रफ्तार में,
एक ही दिशा की ओर।
वैसे जैसे ज़िंदगी,
आते है पहले सुख की ओर,
फिर वापस दुख की ओर,
एक ही रफ्तार में,
एक ही दिशा में,
~~जानती थी मुझे क्यों कर रही थी,~~

~~लहरें अपनी~~
छू कर जाती है वो धरती की रेत को,
~~मर~~ जाती है जल्दी अपनी सखियों के पास।
लगा जैसे मनुष्यों की करतूतें देख,
सागर भी रह गई नाराज़ - नाराज़।
फिर लगा जैसे लहरें भी ~~बहुत~~
बहुत ज़्यादा सिखा ही देती है मनुष्यों को,

कि अगर सुख है तो,
फिर गम भी है,
अगर पैदा हुए हैं तो,
तो फिर मौत भी है।

सोच रही थी मैं, कि,
सागर की किनारे बैठ,
ज़िंदगी की हर रंग,
ज़िंदगी की हर मोड़,
सब सिखा रही थी है, कि
ये विशाल सागर, तो,
क्यों सागर में लहरे उमट रही हैं?.....
क्यों मेरी दिल की तरह सागर की तरह,
सागर की लहरे
सागर में लहरे उमट रही है?.....